इक्विटी स्टाइल बॉक्स

Value Research

म्यूचुअल फंड के लिए इक्विटी स्टाइल बॉक्स, मार्केट कैपिटलाइज़ेशन और निवेश के स्टाइल के मामले में उसके पोर्टफोलियो ओरिएंटेशन का एक मोटा-मोटा पैमाना है. इसे 3x3 मैट्रिक्स (कुल 9 बॉक्स) के रूप में दिखाया जाता है, जिसमें कॉलम वैल्यूएशन के आधार पर निवेश के स्टाइल और रो पोर्टफ़ोलियो के मार्केट कैपिटलाइज़ेशन को दिखाती हैं.

पोर्टफ़ोलियो का ज़्यादा मार्केट कैप यह बताता है कि उसमें बड़ी और बेहतर तरीक़े से स्थापित कंपनियों का वर्चस्व है. लार्ज-कैप स्टॉक्स आम तौर पर स्मॉल-कैप की तुलना में ज़्यादा स्थिर होते हैं, जबकि स्मॉल-कैप में उतार-चढ़ाव ज़्यादा और लिक्विडिटी कम होती है. मार्केट-कैप की कैटेगरी SEBI द्वारा तय की गई कैप रैंकिंग मेथडोलॉजी पर आधारित होती है. लिस्टेड इक्विटी स्टॉक्स को फुल मार्केट कैपिटलाइज़ेशन के आधार पर घटते क्रम में रैंक किया जाता है. मार्केट कैप के हिसाब से टॉप 100 कंपनियां लार्ज-कैप स्टॉक्स मानी जाती हैं, इसके बाद की 150 कंपनियां (रैंक 101 से 250) मिड-कैप में आती हैं और बाकी सभी कंपनियां स्मॉल-कैप में रखी जाती हैं. यह क्लासिफ़िकेशन हर साल जून और दिसंबर के डेटा के आधार पर, हर छह महीने में अपडेट किया जाता है.

निवेश स्टाइल की बात करें तो कोई फ़ंड ग्रोथ इन्वेस्टिंग, वैल्यू इन्वेस्टिंग या दोनों के मेल (जिसे ब्लेंड कहा जाता है) को फ़ॉलो कर सकता है. ग्रोथ स्टॉक्स में आम तौर पर प्राइस-टू-अर्निंग (P/E) और प्राइस-टू-बुक वैल्यू (P/B) रेशियो औसत से ज़्यादा होते हैं. इसके उलट, वैल्यू स्टॉक्स में P/E और P/B रेशियो कम होते हैं.

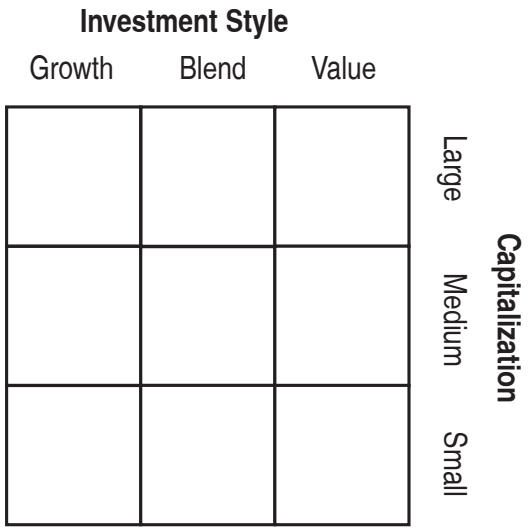

यह मैट्रिक्स उन म्यूचुअल फ़ंड्स के लिए बनाया जाता है जिनके पोर्टफ़ोलियो में इक्विटी यानी सभी इक्विटी और हाइब्रिड फ़ंड्स होते हैं. इसलिए मैट्रिक्स में सिर्फ़ एक ही बॉक्स हाईलाइट किया जाता है, जो किसी तय पोर्टफ़ोलियो डिस्क्लोज़र के लिए फ़ंड के पोर्टफ़ोलियो की ख़ास निवेश स्टाइल और मार्केट कैपिटलाइज़ेशन को दिखाता है.

इसकी मेथडोलॉजी काफ़ी सरल है. सबसे पहले, म्यूचुअल फ़ंड के पोर्टफ़ोलियो में मौजूद सभी इक्विटी होल्डिंग्स को लिस्ट किया जाता है, जिसमें वे संबंधित म्यूचुअल फ़ंड होल्डिंग्स भी शामिल होती हैं जो उसके पास हो सकती हैं.

इसके बाद प्रक्रिया दो हिस्सों में होती है. हम (i) पोर्टफ़ोलियो मार्केट कैप और (ii) पोर्टफ़ोलियो वैल्यूएशन स्कोर कैलकुलेट करते हैं. मोटे तौर पर, हर इक्विटी कंपनी का मार्केट कैप और वैल्यूएशन स्कोर (जो P/E और P/B के ज़रिए तय होता है) पोर्टफ़ोलियो में उसके वेटेज के रेशियो में जोड़ा जाता है, ताकि फ़ंड का कुल मार्केट कैप और वैल्यूएशन स्कोर निकाला जा सके.

वैल्यूएशन स्कोर फ़ंड के पोर्टफ़ोलियो की दिशा को एक नज़र में समझने में मदद करता है. इससे यह साफ़ होता है कि फ़ंड का एलोकेशन किस मार्केट-कैप सेगमेंट में कितना है (लार्ज, मिड या स्मॉल) और फ़ंड मैनेजर किस स्टाइल (ग्रोथ, वैल्यू या ब्लेंड) को फ़ॉलो कर रहा है.